स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

दिनांक - 19/11/2019

प्रथम सेमेस्टर

सत्र - 2019 - 21

प्रश्न:- 'रासक परंपरा' में अब्दुर्रहमान रचित 'संदेश रासक' का स्थान निरूपित करते हुए उसके वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालें।

प्रश्नोत्तर:- विद्वानों ने भारतीय साहित्य के प्रारंभिक हिन्दी काव्य को आदिकाल नाम से जाना जाता है आदिकाल में कई महत्वपूर्ण कवि हुए हैं जिनमें चंदवरदाई के साथ-साथ अब्दुर्रहमान का भी नाम आता है, इन पर कई प्रश्न उठते हैं जिसमें महत्वपूर्ण है रासक परंपरा में 'संदेश रासक का स्थान।

प्रारम्भ में यह ध्यान देने वाली बात है कि 'रासक' शब्द का निर्माण कैसे हुआ है। तो यह बता दूं कि इस रासक शब्द का संबंध प्राचीन रास या रासा शब्द से है, यह शब्द 'रास' का उत्तरवर्ती स्वरूप है। यह काव्य रूप की दृष्टि से अपभ्रंश काव्य के अंतर्गत रासक श... से संबद्ध है। इस काव्य में प्रधान रूप से रासक या रासा छंद तथा गौण रूप से इसमें अडिल्ला, गाहा ... छंदों का प्रयोग हुआ है, दूसरी तरफ गठन दृष्टि से भी ध्यान देने की जरूरत है, तो य... प्रबंध काव्य की श्रेणी में आता है इस...

NOTES

MARCH 2013

[illegible]

की आयोजना की गयी है। इसमें प्रथम प्रक...

२

उदाहरणार्थ रूप में वर्णित है ... में प्रस्तावित विषय वर्णित है। आगे हम देखते हैं कि दूसरे प्रक्रम में नायिका एक पथिक से अपनी दशा और वियोग की दुखद स्थिति का वर्णन सुनाकर उसके माध्यम से अपने नायक पति के पास संदेश पहुँचाने का आग्रह करती है। इस कारण के तीसरे प्रक्रम में नायिका अपने वियोग का वर्णन करती है। इस वियोग वर्णन का आधार प्रयुक्त हुई है। षड्-ऋतु-वर्णन तथा बारहमासा का वर्णन। यह वर्णन वियोग के उद्दीपन का कार्य भी करते हैं।

इसमें संदेश तत्व का प्रयोग किया गया है इसलिए इसकी समानता महाकवि कालिदास की सर्व प्रसिद्ध रचना मेघदूत से की जा सकती है। दोनों रचनाओं को देखते हैं तो दोनों में काफी समानता दिखाई देती है, फिर भी एक अलग और विलक्षण वैशिष्ट्य भी इस में दिखाई देता है। आगे दोनों के मध्य समानता तथा असमानता पर नजर डालना आवश्यक है।

NOTES

प्रथमतः हम देखते हैं कि दोनों ही रचनाएँ प्रबंधकाव्य की श्रेणी में आते हैं। प्रबंधात्मकता के बावजूद दोनों ही महाकाव्य नहीं हैं। दोनों रचनाएँ खण्डकाव्य हैं ...

है। मेघदूत 'पूर्व मेघ' तथा 'उत्तर मेघ' दो भागों में विभक्त है। ऐसे तो 'संदेशरासक' में तीन प्रक्रम हैं पर प्रथम प्रक्रम मात्र प्रस्तावना है उसमें कथा सूत्र की शुरुआत नहीं होती। इसमें मंगलाचरण, आत्म परिचय, विनय प्रदर्शन आदि मिलता है। दूसरे और तीसरे प्रक्रम में ही सारा प्रस्तावित विषय वस्तु वर्णित है। कालिदास ने मेघदूत में आत्म परिचय नहीं दिया है। अर्थवत्ता की दृष्टि से दोनों ही एकार्थ काव्य की श्रेणी में आता है। श्रृंगार रस ही दोनों का प्रधान रस है। शापवश मेघदूत का नायक देश से दूर चला जाता है तथा 'संदेशरासक' का नायक अर्थोपार्जन हेतु दूर देश चला जाता है। दोनों रचनाओं में वियोग का समय वर्ष भर का होता है। वर्तमान युग के विद्वानों ने 'मेघदूत' को 'गीतिकाव्य' की श्रेणी में रखा है तथा उनका संबंध गेय से मानते हैं। दूसरी तरफ

'संदेशरासक' का संबंध भी तत्कालीन लोक परंपरा से है। अतः हम कह सकते हैं कि

दोनों ही काव्य गेय काव्य है। गेय होने के कारण दोनों में सांगीतिकता समाहित है। दोनों ही काव्यों में [illegible] उद्दीपन रूप में प्रकृति

वर्णन देखने को मिलते हैं और महीनों का वर्ण

हो। कालिदास का नायक यक्ष [illegible]
है कि उसकी प्रियतमा पत्नी यह न समझ बैठे कि
वैसा पति वियोग में प्राण खो चुका है इसलिए
प्राकृतिक उपादान मेघ को अपना संदेश सुनाता
है और कई तरह से उसे समझाने को कहता है
प्रस्तावित काव्य 'संदेशरासक' में नायिका का
वर्णन किया गया है जो एक पथिक से अपनी
दशा का वर्णन करते हुए षड् ऋतु वर्णन करती
है। हमारी दृष्टि में प्रकृति वर्णन की मार्मिकता
दोनों ही काव्यों में देखने को मिलती है, अगर मेघदूत
में प्रकृति को चैतन्य रूप में वर्णित किया गया
है तो कहीं-कहीं 'संदेशरासक' में प्रकृति में
प्राण प्रतिष्ठा देखने को मिलती है, कई स्थान
पर नदियों आदि प्राकृतिक उपादानों का मानवी-
करण कर उसे मानवीय भावनाओं से
ओत प्रोत दिखाया गया है।

जहाँ तक दोनों महत्वपूर्ण कृतियों में
समानता के दर्शन होते हैं परंतु इनमें कुछ
असमानता या वैविध्य अलग-अलग है
पहली असमानता ऋतुओं के वर्णन में दीखती
है। मेघदूत में मात्र वर्षा ऋतु का वर्णन
मेघ के माध्यम से होता है पर संदेश

मेघदूत' में छहों ऋतुओं का वर्णन हुआ है, किन्तु सन्देशरासक' में छहों ऋतुओं का वर्णन किया गया है। ऋतु वर्णन षटऋतु वर्णन उद्दीपक के रूप में होता है पर प्रमुखता इसमें श्रृंगार की ही है। ऋतु शोभा का प्रभाव नायिका के ऊपर दिखाई देती है। कलातत्व की बात देखने पर यह स्पष्ट होता है कि संदेशरासक में कलातत्व कम है और 'मेघदूत' में कलातत्व की अधिकता है। विरह-व्यंजना की दृष्टि से अंतर यह है कि 'मेघदूत' में पुरुष की विरह-व्यंजना का वर्णन है परन्तु 'संदेशरासक' में स्त्री की विरह व्यंजना वर्णित है। 'मेघदूत' की कला में कलात्मकता अधिक है परंतु 'संदेशरासक' मुक्तक रूप में लिखित है परन्तु प्रबंधात्मकता भी है। इसे दोनों रूपों में पढ़ा जा सकता है। इस कारण कवि का अभीष्ट प्रेम भावना का वर्णन तथा विरह वर्णन में ऋतु वर्णन है। पथिक के प्रश्न करने पर नायिका षटऋतु वर्णन करने लगती है। साथ ही देखते हैं कि 'मेघदूत' ऐसी ऐसी परिस्थिति नहीं आती है। वह मात्र अपने संदेश वाहक के रूप में मेघ का चुनाव करता है। मेघदूत का कवि संदेश भेजने हेतु मेघ में प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। उसे इन्द्र का कर्मचारी बताया जाता है।

'संदेश-रासक' का कवि सजीव पथिक

APRIL 2013
M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30

को अपना संदेश वाहक बनाता है जो सहृ

06 WEDNESDAY

2013 MARCH

[illegible] नायिका के [illegible] होने के हेतु
[illegible] है, किंतु नायिका के
आग्रह को ठुकराता नहीं है, वह उसकी
आलंबन कर रखा पुरुषत्व वर्णन को परख कर
संदेश लेकर आगे बढ़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि
[illegible] परंपरा में 'संदेशरासक' का एक
महत्वपूर्ण स्थान है तथा विशिष्टता की दृष्टि
से [illegible] एक महत्वपूर्ण काव्य है।

समाप्त — कुमार रजनीकांत [illegible]

१९/१०/२०[illegible]